जौनसारी उत्सवों एवं मेंलों में सामाजिक संचेतना

डॉ0 अरविन्द वर्मा* डॉ0 निशान्त भट्ट**

**असि0 प्रो0, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, चकराता (देहरादून)*

***असि0 प्रो0, अंग्रेजी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नई टिहरी, उत्तराखण्ड*

सारांश

जौनसार–बावर का क्षेत्र उत्तराखण्ड के देहरादून जनपद में स्थित एक महत्वपूर्ण जनजातिय क्षेत्र है। उत्तराखण्ड प्रदेश की नही बल्कि भारत की महत्वपूर्ण जनजाति है। उत्तराखण्ड में अकेला विस्तष्त क्षेत्र जनजातिय है जिसकी सांस्कषतिक परम्परा, सामाजिक परिवेश, मेलें त्यौहार व परम्परायें विशिष्ठ स्थान रखती है। जौनसार जनजातिय क्षेत्र में मनायें जाने वाले मेलों की तिथि, समय, स्थान एक विशिष्ठ परम्परा के साथ होता है।

जौनसारी मेंलें, लोकत्सवों में आपसी सोहार्द तथा सामाजिक चेतना इस जनजाति के समाज की मुख्य विशेषता है। माघ माह के मेलें हो, मौंण (मछली पकड़ने का मेंला) हो या जनजातिय क्षेत्र की पहाड़ी दीपावली हो, विशेष अवसरों पर उत्साह देखते ही बनता है। स्त्री–पुरूष समानता उनका पारस्परिक सहयोग एवं त्यौहारों को मनाने में विशेष उत्साह महत्वपूर्ण है। जौनसार–बावर की सामाजिक परम्परायें, सामाजिक ताने–बानों को पुष्ठ करने का कार्य करती है। स्त्रीयों की अपनी परम्पराओं के प्रति लगाव एवं जागरूकता जौनसारी संस्कषति को सामाजिक चेतना की ओर अग्रसर करती है। नारी सशक्तिकरण के दौर में जौनसार की महिला त्यौहारों, मेंलों, उत्सवों के माध्यम से अपनी संस्कषति, भाषा, गीत, लोकगीत एवं परम्पराओं को बदलतें युग के दुष्प्रभावों से बचाने का कार्य कर रही है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में इन्ही पहलुओं पर विस्तार से विचार एवं अध ययन किया जायेगा।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:
डॉ0 अरविन्द वर्मा* डॉ0 निशान्त भट्ट,**

जौनसारी उत्सवों एवं मेंलों में सामाजिक संचेतना,

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 58.62
Artcile No. 11 (SM 651)

http://anubooks.com/?page_id=581

भारतीय संस्कषति अनेक विशेषताओं के साथ–साथ अनेको संस्कषतियों हिमालय से लेकर मध्य भाग एवं पठारी भागों व उच्च हिमालयी क्षेत्रों तक फैली हुई है। हिमालयी क्षेत्र में जनजातियों में सर्वाधिक विकसित एवं सांस्कषतिक विरासत एवं मान्याताओं की धनी जौनसारी जनजाति महत्वपूर्ण है। अपने धार्मिक विश्वास ,मेले, त्यौहारों, मान्याताओं तथा देवी–देवताओं के प्रति आस्था ही इस जनजाति की मुख्य विशेषता है।

लम्बी कथा को 'गाथा'' के रूप में परिभाषित किया जाता है लोकभाषा में गाये जाने वाली गाथा को ''लोकगााथा'' के रूप में जाना जाता है लोकगाथा या कथात्मक गीत अंग्रेजी में बैलेड् या बैलाड (Ballad) शब्द से जाना या पुकारा जाता है। अंग्रेजी साहित्यकारो ने भी लोकगाथाओं को अंग्रेजी साहित्य का ''काव्यरूप'' बनाया। लोकगाथायें विशिष्ठ चरित्र व घटनाओं पर आधारित होती है, लेकिन सामाजिक, पारिवारिक एवं धार्मिक मान्यताओं के आधार पर निर्मित होते है।

जौनसार के मेले एवं लोकगीतो की अपनी विशिष्ठ पहचान है, जौनसारी गीतों में एक सामाजिक पर्यावरणीय तथा अपनें प्राकृतिक संसाधनों जल, जमीन, जंगल, पशुओं के प्रति एक विशिष्ठ लगााव दर्शाता है। यमुना एवं टौंस नदी के मध्य का क्षेत्र 1815 से पहले सिरमौर रियासत का भाग था। जौनसार–बावर में प्रचलित ''हारूल'' वीरभड़ों के पराक्रम को पूजते एवं अभिवादन करते है। 'हारूल' जौनसार के सामाजिक, सांस्कषतिक एवं ऐतिहासिक पक्ष को भलीभांति उजागर करते है इसमें सर्वप्रथम अपने ईष्टदेव महासू की महिमा को गाया जाता है।

जौनसारी गीत एवं लोकगीत मेले जौनसारीयों की थाती है क्योकि उत्सव तथा मेलों का मनुष्य के सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी भी देश ,धर्म, सम्प्रदाय के लोगो को उनमे समाजिक रूप से अपने उत्सवों के प्रति लगााव एवं प्रेम होता है।

जिन तिथियों में उत्सव आमोद, प्रमोद और हर्षोउल्लास व्यक्त किये जाते है, वे उत्सव कहे जाते है। लोकमानस की इच्छा के प्रसार से उत्पन्न हर्ष का उत्स ही उत्सव कहलाता है। उत्सवों को सभी के द्वारा सामुहिक रूप से मनाया जाता है। नाच, गाना, खेल, तमाशा, हंसी–खुशी, नये वस्त्र– आभूषण, पकवान, संगी– प्रेमी सभी इन मेलों उत्सवों में मिलना– जुलना होता है। मॉ, बेटियों प्रेमी, रिश्तेदार सभी इन लोक उत्सवों में मिलते है तथा प्रसन्नचित्त होते है। इन मेलों का सांस्कषतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पुरातात्विक महत्व भी बहुत अधिक है।

व्यक्ति तथा समाज को संस्कषति प्रभावित करती है लेकिन हर व्यक्ति हर हाल में संस्कषति का गुलाम नही होता बल्कि वह संस्कषति का निर्माता भी होता है। जब संस्कषति में परिवर्तन होता है, मेलें और उत्सव ही ऐसी परिस्थितियों को जन्म देते है।

मेले और उत्सव समाज एवं व्यक्ति को विभिन्न अनुभव कराते है। सांस्कषतिक विशेषताओं के आधार पर विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त करके ही व्यक्तित्व का विकास होता है। अपने समाज में व्यक्ति को समय–समय पर नवीन परिवर्तन होता तथा देखने को मिलता है इससे अनुभवों और मनोवषत्तियों में परिवर्तन होता है।

जौनसार–बाबर के विभिन्न मेलों के माध्यम से सामाजिक संदेश निकलते है जिससे समाज में संगठित भावना, पारस्परिक प्रेम , एकता जागष्त होती है, ये मेले निम्नप्रकार से है–

1. **बिस्सू मेला–** यह मेला जौनसार क्षेत्र में 13 से 16 अप्रैल तक बैशाखी के शुभ पर्व पर आयोजित किया जाता है। संक्रान्ति में अधिकतर खतें (कुछ ग्रामो का समूह) अपना–अपना बिस्सू का मेला लगाते है बाकी 14, 15 एवं 16 अप्रैल को कुछ प्रसिद्ध बिस्सू मेलें जौनसार के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किये जाते है। इन मेंलों में ग्रामवासी अपने–अपने समूह के साथ गाते–बजाते हुये आपस में मिलते है। इन मेलों में समस्त ग्रामवासी अपनी पारपंरिक वेशभूषा, वाद्ययंत्र एवं औजारों के साथ सम्मलित होते है। इन मेलो में स्थानीय लोक–गीत हारूल, तांदी आदि गाये जातें है। इन मेलो के माध्यम से ही युवक– युवतियॉ अपने जीवन साथी का भी चुनाव करते है।

2. **मरोज (माघ मेला)–** यह त्यौहार प्रत्येक वर्ष जनवरी माह में अर्थत हिन्दी माह के पूरे माघ मनाया जाता है। यह त्यौहार पूस की संक्रान्ति के दिन से आरम्भ होता है। उस दिन सम्पूर्ण जौनसार–बाबर क्षेत्र में प्रत्येक ग्राम में घर–घर में अपने सामर्थ्य के अनुसार बकरें काटे जाते है तथा इन बकरों को काटकर इनकी खालों को निकालकर इसके मांस के टुकडों को रस्सियों से बांधकर घर में लटका दिया जाता है तथा इसका कुछ 'हिस्सा'(बांठी) शादी की हुई बेटियों को भी भेजा जाता है। धीरें–धीरे पूरे माह इसकी दावत अपने ईष्ठ मित्रों, रिश्तेदारों को दी जाती है। इस त्यौहार में भाग लेने के लिये दूर–दराज से प्रवासी जौनसारी भी आते है।

3. **मौण मेंला–** यह मौण मेला जौनसार क्षेत्र में केवल कालसी में मनाया जाता है। इस मौण मेले में भद्रकाली मंदिर के पास अमलावा नदी में बड़े–बड़े पेडों को काटकर नदी में बांध की तरह लगाया जाता है तथा फिर इसमें टिमूर की लकड़ी का चूर्ण डाला जाता है जिससे मछली बेहोश हो जाती है तथा ग्रामीण इसे खेर की लकड़ी से मछली पर वार करके पकड. लेते है। अतः यह एक प्रकार की जल क्रीड़ा है जिसके माध्यम से लोग अपना मनोरजंन करते है और इन मछलियों की आपस में दावत करते है।

4. **जात्रा का मेला–** जात्रा का मेला एक धार्मिक मेला है जो जौनसार क्षेत्र में कही–कही मनाया जाता हैं और जो स्थानीय देवता को समर्पित होता है। इस मेले में प्रथम दिन देवता को स्नान कराया जाता है फिर उसे पालकी में उठाकर उन्हे धूप दिखाई जाती है इसके उपरान्त डोली में बैठाकर उस स्थान पर लाया जाता है जहॉ मेला आयोजित किया जाता है, वहॉ समस्त ग्रामवासियों को दर्शन कराये जाते है। इसके उपरान्त ग्रामवासी अपने पारपरिक वेशभूषा में नाच–गाना करते है।

5. **जागड़ा मेला–** यह मेला जौनसार–बाबर क्षेत्र में टौंस नदी के तट पर हनोल में स्थित महासू देवता से सम्बद्ध एक धार्मिक उत्सव है। इसका आयोजन हनोल में टौंस नदी के तट पर स्थित महासू के मंदिर में भद्रपद की शुक्ल पक्ष की तृतीय चतुर्थी (गणेश–चतुर्थी) तिथि को मनाया जाता है। जागड़ा (रात्रिजागरण) महासू की विशेष पूजा का रूप होता है। इस दिन वहॉ के श्रद्धालुजन व्रती रहकर रात भर महासू देवता की गाथागान एवं स्तुतिगान करते हुये जागरण करते है। प्रातःकाल पुजारी देवता की मूर्ति को यमुना नदी में स्नान कराने के लिये उसकी पालकी को बाहर लाया जाता है। सभी भक्तजन उनके दर्शन करते है तथा लोकवाद्यों की तुमुल ध्वनि के साथ एक शोभायात्रा के रूप में उन्हे यमुना में स्नानार्थ ले जाते है। स्नान कराने के

उपरान्त उन्हे फिर डोली में बैठाकर पुनः मंदिर में स्थापित करने तक जमीन पर नही रखा जाता है। जब देवता पुनः मंदिर में प्रवेश करता है तो उस समय द्याड़निया अर्थात द्याड़ (वाद्यवादनों) की महिलायें वहॉ पर नृत्य प्रस्तुत करती है। द्याड़ वाद्यवादन करते है। मंदिर में पुनः स्थापित कर दिये जाने पर पूजा–अर्चना की जाती है। पूजा की समाप्ति पर व्रती लोग व्रत की समाप्ति पर भोजन ग्रहण करते है।

6. **सुणि**यात– यह पर्व 20गते माघ को मनाते है। इस उत्सव को ग्राम की विवाहित लड़कियों का त्यौहार भी कहा जाता है। इस दिन शादीशुदा लड़कियां अपनी ससुराल से मायके आती है। वे एक–दूसरे से मिलती जुलती है, नाच–गाने एवं खुशियॉ मनाती है। इस उत्सव में सर्वप्रथम लड़किया (सूईण) झाडू के लिये जौनसार क्षेत्र में उगने वाला विशेष घास को दूर–दूर से काटकर लाती है इसलिये इसे सुणियात कहा जाता है। शाम को ग्राम की सभी लड़किया इस विशेष घास को काटकर लाती है तो गॉव में दावत होती थी एवं खूब नाच–गाना होता है। इस दिन इस घास की झाडू से अपने घर पर साफ–सफाई की जाती है देवदार की लकड़ी से बने घरों को रगड़–रगड़ कर चमकाया जाता है। यह त्यौहार साफ –सफाई का संदेश देता है।

उत्सवों एवं मेलों के सम्बन्ध में उल्लेखनीय है कि उत्सव चाहें किसी भी वर्ग का या कोटी का क्यों न हो इसके मनाने वाले मानवों के जीवन के साथ उसका घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। ये समुदाय विशेष की संस्कषति के अभिन्न अंग तो होते ही है उनकी दैनिन्दिन की घिसी–पिटी जीवनचर्या में भी, अचीरकालीन ही सही, एक नवीन उमंग एवं आनन्द का संचार किया करते है। एक ओर उबा देने वाली दिनचर्या में एक प्रेरक नवीनता प्रदान करने के अतिरिक्त सभ्य जगत में इनका धार्मिक एवं सांस्कषतिक महत्व भी होता है, क्योकि इनमें, इन्हे मनाने वाले समुदाय विशेष की अतीत की सांस्कषतिक परम्पराओं एवं ऐतिहासिक घटनाओं का इतिहास भी अर्न्तनिहित होता है, अर्थात इनके विश्लेषणों के माध्यम से व्यक्ति समाज विशेष की उन परम्परागत मान्यताओं, आस्थाओं और लोकाचारों के अतीत में झांक सकता है जो कि अन्यथा अब स्मषतिपटल से ओझल हो चुकी होती है।

सामाजिक स्तर पर मनाये जाने वाले जौनसार–बावर के मेलें एवं लोकोत्सव वे किसी भी रूप में क्यों न हो, तीर्थस्थलीय रूप में हो या देवस्थलीय व्रतोत्सवो के रूप में हो, सभी का यहां के लोकजीवन यथा सामाजिक जीवन में विशेष योगदान रहा है। विदित है कि विगत समयों में यतायात की कोई सुविध्ाा न होने कारण जब इन अलग–थलग पडी इन नदी–घटियों में बसे लोगो के बीच न तो पारस्परिक सम्पर्क हो पाता था और न ही जीवनपयोगी वस्तुओं का सरलतापूर्वक आदान–प्रदान ही हो पाता था तब ये उत्सव एवं मेंलें बड़ी महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका निभाया करते थें। ये उन्हे न केवल पुण्यार्जन करने तथा देवाशीषों को प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान करते है अपितु पारस्परिक सम्बन्धो एवं आवश्यक वस्तुओ के आदान–प्रदान के अवसर भी प्रदान कराया करते है।

संदर्भ–सूची

1– बलूनी, दिनेशचन्द, 2005: उत्तराचंल के लोकगीत, नई दिल्लीः प्रकाशन सूचना विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।(पृ0सं0110–116)

2– बाबुलकर, मोहनलाल, 2004: गढ़वाली लोकसाहित्य की प्रस्तावना, भगीरथी प्रकाशन, नई दिल्ली।(पृ0सं010–14)

3– जोशी, लक्ष्मीकांत, 2007: हारूल– जौनसार बावर के पौराणिक लोकगीत, विनसर पब्लिकेशन, देहरादून।(पृ0सं0328–337)

4– चातक, गोविन्द 2003: गढ़वाली लोकगीतः एक सांस्कृतिक अध्ययन, नई दिल्ली तक्षशिला प्रकाशन।

5– सांकष्त्यायन, राहुल, हिमाचल–1, दिल्ली वाणी प्रकाशन।

6– बहुगुणा, विजय 2016: उत्तराखण्ड का जन– इतिहास, लोकसंस्कृति एवं संपाद0 समयसाक्ष्य पब्लिकेशन फालतू लाईन देहरादून। (पृ0सं0198–217)

7– डबराल, शिवप्रसाद 1971: उत्तराखण्ड का इतिहास भाग–4 वीरगााथा प्रकाशन दोगड्डा ।(पृ0सं0116)

8– शाह, टीकाराम 2016: जौनसार–बावरः ऐतिहासिक संदर्भ समाज,संस्कृति और इतिहास, विनसर पब्लिशिंग कं0 देहरादून। (पृ0सं0307–320)

9– शर्मा, डी0डी0 , 2007 : उत्तराखण्ड के लोकोत्सव एवं पर्वोत्सव, अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।(पृ0सं0111–120)